Dr. Priti Ranjan
Deptt of History
H.D Jain College
B.A Part I
paper- 2
Topic- Eastern Question.

पूर्वी समस्या से आप क्या समझते है? इस साम्राज्य में ब्रिटेन रूस और आस्ट्रिया के क्या स्वार्थ थे? तथा पूर्वी समस्या की विवेचना कीजिए?

19 वीं शताब्दी में यूरोप की समस्याओं में सबसे महत्वपूर्ण समस्या पूर्वी समस्या थी। यह साम्राज्य तुर्की के क्रमिक पतन, रूस के विस्तारवादी कार्यक्रमों आस्ट्रीया द्वारा अपने आप को बचाने का अंतिम प्रयास इंग्लैण्ड द्वारा अपने उपनिवेशों के तरफ जाने वाली रास्तो को बंद करने का प्रयासो स्वैस्लावाद तथा सर्वजर्मवाद में बढ़ते हुए टकरावो का एक सम्मिलत परिणाम था।

डा० मिलर के अनुसार — "यूरोप के से तुर्की साम्राज्य का क्रमिक पतन एवं उसका स्थान लेने की समस्या ही निकट पूर्वी समस्या है।"

साधारणतया पूर्वी समस्या से हमारा तात्पर्य है: —

(a) 14 वीं शदी के मध्यम में जब उस्मान तुर्की ने हेलेसपोंट को पार किया तब से यूरोप के इतिहास में उनका योगदान

(b) तथाकथित बाल्कन राज्यों (यूनान अल्बानिया, क्रोशिया, बोसिनया — हर्जेगोविना, मैसेडोनिया, सर्बिया — मोटेन्ग्रो, बल्गारिया, रोमानिया का क्षेत्र तथा तुर्की का यूरोप प्रदेश) की स्थिति।

(c) काला सागर बोस्फोरस एवं दार्दनेल्स तथा सबसे महत्वपूर्ण कुस्तुंनिया पर अधिकार करने की समस्या

(d) यूरोप में रूस की स्थिति, भूमध्य सागर की ओर उसका झुकाव, स्वार्डियो से होकर समुद्र तक पहुँचाने के अथक प्रयास एवं सुल्तान के सम्राज्य में रहने वाली उसकी अपनी स्लाव जाति की समस्या।

(e) हैब्सबर्ग सम्राज्य की स्थिति, विशेषकर एजियन समुद्र तक पहुँचने का प्रयास

(f) यूरोपीय शक्तियों का समान्य एवं इंग्लैण्ड का विशेष हित।

1453 में रोमन साम्राज्य की राजधानी कुस्तुन्तुनिया पर तुर्की का अधिकार हो जाने के बाद बाल्कन प्रायद्वीपीय का बहुत बड़ा भाग तुर्की साम्राज्य में आ गया। पूर्व में फारस की खाड़ी से लेकर पश्चिम में विस्के की तथा इसके क्षेत्र यूरोप ~~अफ्रिक~~ ~~अफि~~ अफ्रिका तथा एशिया के महाद्वीपों में स्थित थे। विशाल तुर्की साम्राज्य में विभिन्न भाषाभाषी तथा जाति के लोग रहते थे। आरंभ से यह कमजोर एवं शिथिल था। तथा बाह्य आक्रमणों का सामना करने में असफल रहता था। फलतः कलावर के अनेक प्रदेश इसके बाहर होने लगे और यह पतनोन्मुख हो गया। 1699 में ~~कर्लो~~ कर्लोविज शांति समझौता से ही तुर्की साम्राज्य का विघटन आरंभ हो गया। अतः उत्तरी अफ्रिका एवं बाल्कन प्रायद्वीप से तुर्की साम्राज्य का नियंत्रण हट गया।

तुर्क साम्राज्य के पतन के अन्य कारण थे - पश्चिम यूरोप में तीव्र औद्योगिकरण एवं आधुनिकरण तथा राष्ट्रीयता का प्रसार। आटोमन (तुर्की) साम्राज्य ने यद्यपि आधुनिकरण कोशिश की थी पर इसकी संख्या आधुनिक के प्रति बहुत उत्साह पूर्ण नहीं थी और इस प्रकार साम्राज्य का धीरे-2 पतन होते चला गया। फ्रांसिसी क्रांति के सिद्धान्त ने तुर्की में पहुंचकर हलचल मचा दी। विभिन्न जातियां अपनी स्वतंत्रता प्राप्ती के लिए आंदोलन करने लगी। बाल्कन प्रायद्वीप में सर्वप्रथम स्वाधीनता संग्राम 1804 में सर्बिया में आरंभ हुआ। विद्रोह की सफल परिणती यूनान की स्वतंत्रता (1830) के रूप में हुई तथा यहाँ से समस्या का वास्तविक रूप सामने आना प्रारंभ होता है। इसके बाद लगभग सम्पूर्ण बाल्कन क्षेत्र ही विद्रोही हो गया। तुर्की अब यूरोप का मरीज बन चुका था। तथा प्रश्न अब यह था कि इसके पतन के बाद यूरोपीय प्रदेशों का उत्तराधिकारी कौन होगा।

पूर्वी समस्या के दो पहलू थे - राष्ट्रीय तथा अंतराष्ट्रीय। राष्ट्रीय पहलू बाल्कन प्रायद्वीप के स्वतंत्रता संग्राम से संबंधीत है, एवं अंतराष्ट्रीय

पहलू पूर्वी समस्या के यूरोप में विभिन्न राज्यों के हित को प्रदर्शित करता है। यूरोपीय शक्तियों की उस समस्या में स्वार्थ की खोज तथा दिलचस्पी ने उसे अधिक जटिल बना दिया था। इस समस्या से मुख्यतः तीन देश के हित संबंधित थे → ब्रिटेन, रूस तथा आस्ट्रिया।

इंग्लैण्ड का स्वार्थ

पहले इंग्लैण्ड ने तुर्की का महत्व नहीं समझा था। लेकिन जब नेपोलियन ने ~~मिश्र~~ मिस्त्र पर हमला किया तो अंग्रेजों को इस क्षेत्र पर प्रभाव का मूल्य समझ में आ गया। प्रधानमंत्री पीट ने पार्लियामेंट की महत्वपूर्ण में रुची पैदा कर दी। इंग्लैण्ड रूस के दक्षिण में विस्तार से डरता था और उसे यह भय था कि कहीं रूस खैबर के दर्रे के रास्ते भारत में न घुस आए। इसलिए इंग्लैण्ड रूस के विस्तार का विरोधी था। अतः इंग्लैण्ड के विदेश मंत्री परमस्टन का विचार था कि यूरोप के मरीज तुर्की की विशेष सेवा सुश्रूषा की जाए, ताकि वह जीवित रहे और रूस के ~~प्रसार~~ प्रयास का विरोध कर सके। जब पूर्वी समस्या को लेकर युद्ध छिड़े, इंग्लैण्ड इस विशिष्ट निती का पालन करता रहा।

रूस का स्वार्थ

पूर्वी समस्या रूस की विस्तार वादी नीति का ही मुख्य परिणाम था। रूस का विचार था कि जातीय, धार्मिक तथा राजनीतिक एवं ऐतिहासिक दृष्टि से उसका घनीष्ट संबंध तुर्की साम्राज्य के पतन से था। रूस एक स्लाव जाति का देश था तथा तुर्की सुल्तान के अधीन बाल्कन प्रायद्वीप में बहुत स्लाव थे जिन्हें रूस अपने राज्य में सम्मिलत करना चाहता था। रूस यूनानी धर्म का प्रधान था। उसकी इच्छा थी कि तुर्की साम्राज्य के यूनानी इसाई उसके अधीन आ जाए। रूस अपने को पूर्वी रोमन साम्राज्य का वास्तविक उत्तराधिकारी समझता था तथा कुस्तुनतुनिया पर अधिकार करना चाहता था। साथ ही रूस दक्षिण की ओर भूमध्यसागर तक पहुँचना चाहता था।

तथा इन सब के लिए रूस का बाल्कन प्रदेश पर अधिकार आवश्यक था। अतः वह "यूरोप के मरीज" का विनाश चाहता था। जिससे तुर्की विभाजित हो जाए और रूस को उसमें से सबसे बड़ा भाग मिले। 1815 के बाद रूस इस दिशा में दिलचस्पी लेने लगा तथा 1840 ई० के बाद रूस की तुर्की के प्रति निरंतर यहि नीति रही। तुर्की को मरीज बनाने के लिए वह बाल्कन की ईसाई प्रजा को प्रोत्साहित करता रहा। जिसे अखिल स्लावीय दर्शन द्वारा किया गया, जिसमें रूसी नेतृत्व में सभी स्लावों की एकता का आह्वान किया गया।

1804 ई० में सर्बिया और 1821 में यूनान में तुर्की साम्राज्य के विरुद्ध विद्रोह कर दिया। रूस का हीत इसी में था कि तुर्की साम्राज्य कमजोर पड़ता जाए। 1829 में एड्रियानोपल और 1833 ई० की स्केलसी की संधिया बाल्कन प्रायद्वीप में रूस के बढ़ते हुए प्रभाव को इंगित करती है। जिसका अंत क्रीमिया के युद्ध में उसकी पराजय के साथ होता है।

आस्ट्रिया का स्वार्थ

आस्ट्रिया का भी पूर्वी समस्या से काफी गहरा संबंध था। वह काला सागर तक पहुंचने के लिए सुरक्षित मार्ग चाहता था। इसके अतिरिक्त उसके साम्राज्य में बहुत से ~~स्लाव~~ स्लाव थे। उसे भय था कि बाल्कन प्रायद्वीप में रूस का प्रभुत्व स्थापित हो जाने से वे इसके आधीन हो जाने की चेस्टा करेंगे। इस दृष्टि से आस्ट्रिया रूस के प्रसार का विरोधी था। 15 July 1774 ई० की कुचुक कैनरजी संधि द्वारा रूस ने निकट ~~पूर्वी~~ पूर्व में अपना सीमा विस्तार किया, जो कि आस्ट्रिया के लिए असहाय था। उसने तुरंत ही 7 May 1775 ई० में तुर्की से एक संधि करके बुकोविना का प्रदेश प्राप्त किया। इस तरह से प्रायः आस्ट्रिया तथा रूस के पारस्परिक हित बाल्कन प्रायद्वीप में बराबर टकराते रहें।